सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग २)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
'मैंपन' (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

दूसरों को अपने पूर्वकृत पापकर्मों से मुक्त करानेवाले जान कर उपकारी मानना और मन में धन्यवाद देना। इस से उन के ऊपर ग़ुस्सा नहीं आयेगा।

Consider others (those who cause you pain) to be your benefactors as they have freed you from your past sins. Thank them in your heart. On doing this, you will feel no anger or resentment towards them.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर कोई हमारे घर से कचरा साफ़ करता तो हम उसे उपकारी मानते हैं। उसी तरह जब कोई हमारी आत्मा का कचरा (कर्म) साफ़ कर देता है, तब उसे उपकारी मानना आवश्यक है।

If someone cleans our home, we feel gratitude towards him. Similarly, if someone cleans our soul of karmic dirt, we should feel grateful towards him.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इस तरह “धन्यवाद! सुस्वागतम! (Thank You! Welcome!)” करके आत्मा का फ़ायदा करते रहना है। इस से वह जीव जहाँ भी होगा वहाँ उसे किसी प्रकार की शिकायत नहीं रहेगी। (No Complaint Zone)

Thus, keep helping your soul by using ‘Thank You! Welcome!’ One who does this shall lead a regret-free life. He shall inhabit the ‘No Complaint Zone’.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

No Complaint Zone यानी मुझे किसी से भी कोई भी शिकायत नहीं है, क्यों कि वर्तमान में मेरे साथ जो कुछ हो रहा है वह मेरे अपने भूतकाल के कर्मों का फल है। इस लिये अगर मुझे किसी से शिकायत है तो केवल अपने आप से। और किसी से नहीं।

Inhabiting the 'No Complaint Zone' means that one has no complaints, no regrets and no grudges for others. Because whatever has happened to one is the result of one's own past karmas. Hence, if one has to blame someone, one should blame oneself. Not anyone else.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोक के सभी जीव सम्बन्धी अपने भावों को मैत्री, प्रमोद, करुणा और मध्यस्थ इन चार वर्गों में ही बाँटना; अन्यथा वे भाव मेरे लिये कर्मबन्ध के कारण बनेंगे।

All your emotions and feelings towards other living beings in the universe should only fall under the categories of maitrī, pramoda, karuṇā and mādhyasthya. Else, your emotions and feelings shall become the cause of karmic bondage.

1. मैत्री Maitrī — Universal Friendship: It shall protect my happiness by not creating enmity with others. Wanting the welfare of others shall ensure my own welfare.
2. प्रमोद Pramoda — Admiration: By admiring others' virtues I shall imbibe them.
3. करुणा Karuṇā — Compassion: Compassion for sinners because they are unaware of the Universal Law.
4. माध्यस्थ्य Mādhyasthya — Indifference or no response: When anyone hurts me, I shall stay calm and contemplate upon 'Thank you! Welcome!' inside my heart. This protects my happiness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारी सब से बड़ी कमज़ोरी यह है कि हम हरदम दूसरों को बदल कर अपने अनुकूल बनाने में लगे रहते हैं, जिस में सफलता मिलना अत्यन्त कठिन है।

Our greatest weakness is that we are constantly trying to change others, trying to make them conform to standards of behaviour set by us. We are extremely unlikely to succeed in changing others.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने आप को बदलना सब से आसान है फिर भी उस के लिये हम कभी प्रयास नहीं करते। अपने आप को धर्म के अनुकूल बदलना सम्यग्दर्शन की योग्यता प्राप्त करने के लिये अनिवार्य है।

It is easiest to change oneself. Despite that, we never attempt to change ourselves. It is essential to change oneself as per the teachings of dharma in order to qualify to attain samyaktva.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से हम ने जगत के ऊपर अपना हुक्म चलाना चाहा है, जगत को अपने अनुकूल बदलना चाहा है। यही चाहा है कि सभी हमारे कहे अनुसार चलें और अपने आप को बदलें । परन्तु हम ने कभी भी अपना परिणमन भगवान के कहे अनुसार नहीं किया। बल्कि हम अनादि से अपनी मति अनुसार ही परिणमे हैं; यही स्वच्छन्दता है।

Since beginningless time, we have tried to rule the world, tried to get others to obey our commands. We want the world to run as per our wishes. But we have never tried to change as per the teachings of the Lord. In fact, since beginningless time, we have behaved as we felt like. This uncontrolled behaviour is known as svacchandatā.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से हम प्रशंसा-प्रेमी हैं। अगर कोई हमारी निन्दा करता है तो हमें दुःख होता है। मगर हमें यह समझना है कि निन्दा-प्रशंसा, सुख-दुःख, रति-अरति, अमीरी-ग़रीबी इत्यादि सभी संयोग कर्मों के अधीन होते हैं। हमारे चाहने से या नहीं चाहने से उन में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हाँ, हम आर्तध्यान और रौद्रध्यान के भागी अवश्य होंगे।

Since beginningless time, we have loved praise. We are pained by criticism. But we must realise that the criticism and praise, joy and sorrow, likes and dislikes, wealth and poverty, etc. are all governed by karmas. Whether we like them or dislike them makes no difference. All we end up with is ārta dhyāna and raudra dhyāna.

Ārta Dhyāna - saturnine meditation leading to rebirth as an animal
Raudra Dhyāna - impassioned/passionate/wrathful meditation leading to rebirth in hell

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से सत्य धर्म की प्राप्ति अति दुर्लभ बनी हुई है। जब-जब हमें सत्य धर्म की प्राप्ति हुई, हम उसे पहचान ही न सके। अगर पहचाना भी तो उस पर श्रद्धा नहीं कर पाये।

Since beginningless time, the attainment of Real/True Dharma has been extremely rare. We failed to recognise True Dharma whenever we came across it. Even when we recognised it, we had no faith in it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से हम सत्य धर्म के नाम पर कोई न कोई सम्प्रदाय, पक्ष, आग्रह या व्यक्ति-विशेष के प्रति राग में फँस कर रह गये। अपने उस आग्रह को ही हम ने सत्य धर्म मान कर अपना अनन्त काल गँवाया है और अनन्त दुःख सहे हैं।

Since beginningless time, we fixated upon a particular community, sect, persuasion or cult leader in the name of True Dharma. We were convinced that our fixation was True Dharma. And thus wasted infinite time and suffered infinite grief.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म पाने के लिये "सच्चा वही मेरा और अच्छा वही मेरा" यह भावना भाना नितान्त आवश्यक है।

In order to attain True Dharma, it is imperative to constantly practise the affirmation that "I side with the Truth. I side with Goodness."

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म पाने के लिये जीव को सत्य स्वीकारने के लिये तत्पर रहना चाहिये (Ready to accept) और उस के अनुसार अपने आप को बदलने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये (Ready to change)। बिना इस तैयारी के वह जीव सत्य धर्म नहीं पा सकता।

In order to attain True Dharma, one has to always be ready to accept the truth and ready to change accordingly. One cannot attain True Dharma without this commitment.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म ज्ञानी के अन्तर में बसता है। वह बाहर ढूँढने से नहीं मिलनेवाला। सत्य धर्म ज्ञानी के सांनिध्य में ही मिलेगा क्यों कि ज्ञानी ही जीव को आत्मा की पहचान आसानी से करा सकता है। इस लिये सत्य धर्म को कोई बाहरी क्रिया-काण्ड अथवा व्रत आदि में न मान कर उसे 'सम्यग्दर्शन की विधि' में कहे अनुसार अपने अन्तर में खोजना है तथा प्रकट करना है।

True Dharma resides in the soul of the self-realised person (knower). It cannot be found outside. It can only be found under the guidance of the knower because only he can help the seeker realise the true nature of the soul. Hence, do not associate True Dharma with a particular set of rituals or certain vows, etc. You will have to discover it and manifest it within yourself, following the method explained in "Samyagdarśana Ki Vidhi".

Download `Samyagdarśana Ki Vidhi' or `Samyagdarśana Ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो मोक्षमार्ग जानता है वही उसे बता सकता है। मोक्षमार्ग संसार में डूबे हुए जीवों के लिये अति गहन और अगम्य है, परन्तु सत्पुरुष (ज्ञानी) के माध्यम से सुलभ है।

Only he who knows the path of liberation can explain it. The path of liberation is intensive and inaccessible to those immersed in saṃsāra. But it becomes easy when explained by a jñānī (self-realised person).

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म की योग्यता प्रकट करने के लिये: नीति-न्यायपूर्वक अर्थार्जन, जो मिला उस में सन्तोष, कम से कम समय अर्थार्जन के लिये देना, अधिक से अधिक समय स्वाध्याय-मनन-चिन्तन आदि में लगाना, सात्विक भोजन करना, कन्द मूल-अनन्तकाय का त्याग, जीवदया का पालन, रात्रिभोजन का त्याग, अभक्ष्य भोजन का त्याग, शरीर को कम से कम सँवारना, सादा जीवन, सुखशीलता का त्याग, अत्यधिक क्रोध-मान-माया-लोभ का त्याग, पुराने पापों का पश्चात्ताप, बारह भावनाओं का चिन्तन, जीवों के प्रति चार भावनाएँ भाना, पंचपरमेष्ठि के गुणों के प्रति अहोभाव, सभी जीवों के लिये गुणदृष्टि रखना, ये सभी गुण आवश्यक हैं।

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

In order to qualify to attain True Dharma, one must possess the following qualities:
Ethical livelihood; contentment; giving the least time to earn one's livelihood; giving the most time to study, contemplation, reflection, etc.; eating pure food; renunciation of roots and tubers; compassionate living; not eating after sunset; not eating abhakṣya (inappropriate) food, not beautifying one’s body; leading a simple and transparent life; renunciation of luxuries and comforts; renunciation of excessive anger, arrōgance, artifice and avarice; deep regret for previous misdeeds, reflecting on the 12 contemplations and 4 contemplations; deep appreciation of the qualities of the 5 supremely beneficial beings; and perceiving only goodness in others.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म इतना सामर्थ्यवान है कि उस पर सच्ची श्रद्धा होने मात्र से जीव अपने आप सत्य धर्म के अनुकूल वर्तन करने लगता है।

True Dharma is so powerful that even firm conviction in the True Dharma ensures that one begins behaving in accordance with its edicts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपने आप को सत्य धर्म के अनुकूल बदलने से अपने सत्ता में रहे हुए कर्मों के ऊपर अनेक प्रक्रियाएँ होनी प्रारम्भ हो जाती हैं। जैसे पाप प्रकृति का पुण्य प्रकृति में संक्रमण, पुण्य का उदवर्तन, पाप का अपवर्तन, इत्यादि। इस से कई बातों में सूली की सज़ा सुई में बदल जाती है।

Behaving in accordance with the edicts of True Dharma ensures that one's past karmas start altering. For instance, the demeritorious is transformed into the meritorious, there is a rise in puṇya, fall in pāpa, etc. There is such upheaval in karmas that at times one who was likely to get hanged for his past misdeeds will very likely get away with a slap on the wrist.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धार्मिक व्यक्ति की सूली की सज़ा सुई में बदल जाने के बावजूद भी हमें उस का ज्ञान न होने से लोग कभी-कभी ऐसा भी सोचते हैं कि देखो यह धार्मिक व्यक्ति होने के बावजूद कितना दु:खी है। उन्हें पता नहीं है कि सच्चा धार्मिक व्यक्ति अब अमुक गति में जानेवाला नहीं होने से उस गति के लायक पाप कर्म संक्रमित हो कर अभी उदय में आये हैं। इस कारण लोगों को कभी-कभी लगता है कि लोग धर्म करने के बाद भी दु:खी रहते हैं।

Sometimes, even deeply religious people are seen to be suffering from the slings and arrows of misfortune. The suffering of those who follow True Dharma is greatly alleviated, to the extent that the most severe punishment is converted to the mildest punishment. Not knowing this fact, we may at times wonder why even the deeply religious have to suffer so much in saṃsāra. Nor do we know that if a person is going to be born in a certain gati, his sins (which would cause him to take birth in another inferior gati), come to fruition immediately to ensure that the religious person's sins are quickly dissipated and he takes birth in a better gati than he would have had otherwise.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से आज तक अनन्त बार दीक्षा ग्रहण की, अनन्त बार व्रत-तप आदि किये, अनन्त बार ध्यान आदि किये, अनन्त बार हमने "मैं आत्मा हूँ" या "मैं शुद्धात्मा हूँ" या "अहं ब्रह्मास्मि" या "तत्त्वमसि " इत्यादि जाप किये या रट्टा लगाया; परन्तु सत् की प्राप्ति अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई। क्यों कि जब तक आत्मा योग्यता की प्राप्ति नहीं करती तब तक सम्यग्दर्शन की प्राप्ति अति दुर्लभ है। अर्थात् पहले हमें आत्मा को मोह के ज्वर से बचाना है।

Since beginningless time, we have taken the vows of asceticism innumerable times, practised the vows and penance endless times, endlessly recited or chanted "I am the soul", "I am the blemishless soul", "I am the Brahma" and "I am the Truth"; but did not attain the truth i.e. Samyagdarśana. Because until and unless the soul qualifies for it, samyaktva cannot be attained. In other words, it is imperative that we first save the soul from the disease of delusion.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दु:ख के संयोग में भी अगर जीव हमारी पुस्तक में बताये "धन्यवाद! सुस्वागतम! (Thank You! Welcome!)" का भाव लाने का पुरुषार्थ करता है, तब वह जीव दु:ख में भी सुखी रह सकता है। लोगों को लगेगा कि यह जीव बहुत दु:खी है, मगर वह जीव "धन्यवाद! सुस्वागतम! (Thank You! Welcome!)" और "जो भी होता है अच्छे के लिये ही होता है" के माध्यम से समाधानी और समभावी बनकर शान्त और प्रसन्न रहता है।

When overcome by grief, if the seeker deals with the situation in the manner explained in the 'Samyagdarśana Ki Vidhi', by using the Thank you! Welcome! method, he will find tranquility and peace even in adverse circumstances. Others may think that the seeker is overwhelmed by grief, but in reality he has used the 'Thank you! Welcome!' method and knows that whatever happens happens for the good. Such a person remains calm and unruffled in the face of the greatest adversity and feels joy within.

Download `Samyagdarśan ki Vidhi' or `Samyagdarśan ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मोहज्वर को नापने के लिये मानक मापदण्ड (थर्मौमीटर) है यह प्रश्न - हमें क्या पसन्द है? इस प्रश्न के उत्तर में जब तक सांसारिक वस्तु या सबन्ध या इच्छा या आकांक्षा है, तब तक हमें समझना है कि हमारा मोहज्वर बहुत तेज़ है और उस का इलाज करना आवश्यक है। मोहज्वर का इलाज 'सम्यग्दर्शन की विधि' इस पुस्तक में दिया गया है।

The most reliable thermometer to measure the extent of the sickness of delusion is the question — What do I like? If the answer is that I like something worldly, I must realise that my illness is very severe and needs to be cured. The cure has been given in the book "Samyagdarśana Ki Vidhi".

Download `Samyagdarśan ki Vidhi' or `Samyagdarśan ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से आज तक अनन्त बार दीक्षा ग्रहण की, अनन्त बार व्रत-तप आदि किये, अनन्त बार ध्यान आदि किये, अनन्त बार हमने "मैं आत्मा हूँ" या "मैं शुद्धात्मा हूँ" या "अहं ब्रह्मास्मि" या "तत्त्वमसि " इत्यादि जाप किये या रट्टा लगाया; परन्तु सत् की प्राप्ति अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई। क्यों कि यह सब हठयोग कहलाता है और वास्तव में सत्य धर्म हमारी पुस्तक में बताये गये उपचार (राजयोग) से सहज ही प्राप्त होता है, न कि हठयोग से।

Since beginningless time, we have taken the vows of asceticism innumerable times, practised the vows and penance endless times, endlessly recited or chanted "I am the soul", "I am the blemishless soul", "I am the Brahma" and "I am the Truth"; but did not attain the truth i.e. Samyagdarśana. Because all this is Haṭha Yoga. True Dharma cannot be attained through Haṭha Yoga. It is attained by following Rāja Yoga, which I have explained in the book "Samyagdarśana Ki Vidhi".

Download `Samyagdarśan Ki Vidhi' or `Samyagdarśan Ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से धर्म को बाहर ही ढूँढा है; मगर आत्मा का धर्म, आत्मा के बाहर कैसे हो सकता है? बाहर से हम को केवल दिशानिर्देश ही मिल सकता है; परन्तु वह सम्यक् दिशानिर्देश प्राप्त करने के लिये हमारे पास खुला दिमाग़, शास्त्रों का गहन अध्ययन, शास्त्रों से मात्र अपने आत्मकल्याण के लिये कार्यकारी बातें (आत्मनिर्णय और आत्मानुभूति के लिये आवश्यक बातें) ही ग्रहण करने का भाव रखना चाहिये।

Since beginningless time, we have sought dharma outside. But how can the dharma of the self be found outside? We can only gain insightful and accurate directions and pointers from outside. But even to get those, one needs an open mind, deep study of the scriptures, and the ability to glean from the sacred texts only that which benefits our soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मप्राप्ति के लिये शास्त्रों से विवादास्पद बातें ग्रहण न करें अर्थात् जिन का उत्तर सिर्फ़ केवली भगवान ही दे सकते हों ऐसी विवादास्पद बातें ग्रहण न करके उन बातों के लिये मध्यस्थ भाव भाना और जैसा केवली भगवान ने देखा है वैसा मुझे मान्य है ऐसा भाव रखना, "सच्चा वही मेरा और अच्छा वही मेरा" ऐसा भाव, सत्य को स्वीकारने की तत्परता (Ready to accept), उस के अनुसार जीव की अपने आप को बदलने की तत्परता (Ready to change), इत्यादि होना परम आवश्यक हैं।

For the upliftment of the soul, do not seek controversial subjects in the scriptures, where only the omniscient lord can discriminate between right and wrong. At all times, retain a neutral point of view and remain firm in your conviction that whatever the omniscient lord has observed is the final truth. Be clear that "What is true is mine. What is good is mine." Always be ready to accept the truth, and be ready to change. These qualities are vitally important if you wish to attain self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिस ने आत्मा का अनुभव किया है ऐसे सत्पुरूष का योग और उन के प्रति अपना पूरा समर्पण आवश्यक है। क्यों कि उन के प्रति अपने पूरे समर्पण से उन का दिया गया उपदेश हमारे जीवन में तुरन्त ही परिणमता है, अर्थात् हमारे जीवन में बहुत जल्द धर्म के अनुकूल बदलाव आता है।

Guidance from and deep commitment towards one who has realised his soul is essential. Because commitment to the teacher ensures that his teachings immediately take effect in our life. In other words, our life rapidly moves in the direction of dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मेरे साथ कभी भी अन्याय नहीं होता, अर्थात् मेरे साथ जो भी घटित होता है वह निश्चय से मेरे कर्मों का ही फल है, तब अन्याय की बात ही नहीं रहती। बल्कि मेरे साथ जो भी होता है वही मेरे लिये न्यायसंगत है। परन्तु इस से मुझे अन्य किसी के साथ अन्याय करने की अनुमति नहीं मिलती, यह समझना परम आवश्यक है।

No injustice is done to me ever. Whatever happens to me is a consequence of my own past deeds - karmas. There is no question of injustice. But this does not give me a license to do injustice to others. It is imperative that I understand this.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मप्राप्ति के लक्ष्य के साथ “सम्यग्दर्शन की विधि” में बताये अनुसार वैराग्य और उपशम करना अति आवश्यक हैं।

With the objective of attaining self-realisation, it is imperative that one practise indifference to materialism and subsidence of karmas by the method prescribed in the book "Samyagdarśana Ki Vidhi".

Download `Samyagdarśan ki Vidhi' or `Samyagdarśan ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्पुरूष, सत्संग और सत्शास्त्र का अध्ययन इत्यादि सत्य धर्म पाने के लिये पथप्रदर्शक का काम करते हैं।

Realised souls, spending time in the company of realised souls and reading texts composed by realised souls, are all guides for attaining True Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सारे संयोग अनित्य हैं, कोई भी संयोग हमेशा साथ रहनेवाले नहीं हैं। इस लिये संयोगों से मेरापन और मैंपन त्यागना अति आवश्यक है।

All circumstances are momentary. None of them are permanent. Hence, it is imperative to give up any sense of oneness and mineness towards worldly situations.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

वैराग्य यानी मेरे मन में बसे संसार का नाश करना। बाहर का संसार हमें उतना बाधाकारक नहीं होता जितना बाधाकारक हमें अपने मन में बसा संसार होता है। इस लिये पहले हमें अपने मन के संसार का नाश बारह भावना-अनुप्रेक्षा से करना है, बाद में बाहर के संसार का नाश क्रमश: अवश्य होगा।

Renunciation means destroying the worldly cravings that reside within ourselves. The external world is less harmful to us than the world of cravings that resides within us. Hence, we must first destroy our inner cravings by constantly reflecting upon the 12 contemplations. Once that is achieved, external renunciation shall certainly come on its own.

For 12 Bhāvanās refer `Key to Happiness' or `Sukhi Hone ki Chabi' or 'Sukhi Thavani Chavi' or `Samyagdarśan ki Vidhi' or `Samyagdarśan ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मन में बसे संसार का कारण दर्शनमोहनीय कर्म है और बाहर के संसार का कारण चारित्रमोहनीय कर्म है। पहले दर्शनमोहनीय कर्म जाता है तब सम्यग्दर्शन (चौथा गुणस्थानक) प्राप्त होता है। बाद में जब चारित्रमोहनीय कर्म क्रमश: जाता है तब आगे के गुणस्थानक प्राप्त होते हैं। बाहर का संसार का नाश क्रमश: होता है।

Darśana-mohanīya karmas (perception obscuring karmas) result in internal cravings for worldly objects and sensual gratification. Cāritra-mohanīya karmas (conduct-obscuring karmas) result in worldly entanglements. Samyaktva (the fourth guṇasthāna) is attained after perception obscuring karmas depart. Following that, when conduct-obscuring karmas depart, the higher guṇasthānas are achieved. Ties to the external world are destroyed sequentially.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

संसार के सारे सम्बन्ध स्वार्थ पर आधारित और क्षणिक होने की वजह से, उन में आसक्ति नहीं करनी चाहिये। परन्तु अपना जो भी कर्तव्य है वह पूरी निष्ठा से निभाना है, उस में कोई कमी नहीं रखनी है।

All our worldly relations are based on selfishness and are momentary. Hence, we must never get attached to them. But we must fulfill our duty towards everyone, with full dedication. No compromises there.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शरीर अशुद्धि से भरा हुआ है, उसे कितनी भी बार स्नान कराने पर भी तुरन्त ही अशुद्ध हो जाता है। धुले हुए कपड़ों को एक बार भी शरीर पर धारण करने से कपड़े अशुद्धि-युक्त हो जाते हैं। और शरीर में करोड़ों रोग भरे हुए हैं वे कब उदय में आयें इस का कोई भरोसा नहीं। ऐसे शरीर का मोह करने जैसा नहीं है।

The body is full of impurities. No matter how frequently you bathe it, it becomes impure immediately after bathing. Even freshly laundered clothes become dirty once worn. Moreover, the body is full of crores of dormant diseases. No one knows when one of them may come into fruition. So there is no point in being deluded about the body.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

संसार आधि-व्याधि-उपाधि से भरा हुआ है। संसार में कहीं भी सुख नहीं होने पर भी जो सुख प्रतीत होता है, वह सुखाभास मात्र है और वह क्षणिक भी है। वह सच्चा सुख नहीं है। जब तक मोह मन्द नहीं होता तब तक यह बात समझ में नहीं आती। इस लिये ज़िसे संसार में सुख दिखता हो, उसे "सम्यग्दर्शन की विधि" में बताये गये उपायों के द्वारा अपना मोह मन्द करना चाहिये।

The world is full of mental problems, illnesses, and problems due to belongings. There is no happiness in this world. What appears to be happiness is actually ephemeral and fleeting. It is not true happiness. But this cannot be understood unless delusion decreases. Hence, one who thinks true happiness is found in samsāra, should read the book "Samyagdarśana Ki Vidhi" and lessen his/her delusion.

Download `Samyagdarśan Ki Vidhi' or `Samyagdarśan Ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मनुष्यभव अति दुर्लभ है, उस में भी पूर्ण इन्द्रियाँ, दीर्घ आयु, आर्य क्षेत्र में जन्म, उत्तम कुल में जन्म, सत्य धर्म, श्रद्धा आदि एक-एक से अति दुर्लभ हैं। इन्हें पाने के बाद भी अगर हम इन का सही उपयोग नहीं कर पायें तब हमें अन्ततः एकेन्द्रिय में जाने से कोई बचा नहीं सकता। और एकेन्द्रिय गति से बाहर निकलना चिन्तामणि रत्न की प्राप्ति से भी अधिक दुर्लभ बताया गया है।

Birth as a human being is the rarest of the rare. And possessing all the senses in their entirety, birth in a land where dharma abounds (Ārya Kṣetra), birth in a noble family, attainment of True Dharma are increasingly rare. If we fail to utilise this opportunity to practise dharma, no one can save us from ending up as one-sensed beings. It has been stated that getting out of the cycle of birth as a one-sensed being is even rarer than finding the wish fulfilling gem.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

Daily Progress याने हर दिन प्रगति। अगर हम प्रत्येक दिन आन्तरिक आध्यात्मिक प्रगति कर नहीं पाये तो हमारा आध्यात्मिक पतन निश्चित है। हमारे भाव स्थिर नहीं रहते। अगर वे उन्नत नहीं हुए तो निश्चित ही अवनत हो जायेंगे।

Daily progress is essential. If we are unable to make spiritual progress on a daily basis, our spiritual downfall is certain. This is because our emotions are not constant. If there is no rise in them, there will be a fall.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनन्त काल तक रहने के हमारे पास दो ही ठिकाने हैं - एक है निगोद और दूसरा मोक्ष। अर्थात् अभी हमारे पास दो ही विकल्प हैं - अगर हमने मोक्ष पाने के लिये सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं किया तो नियम से दूसरा विकल्प यानि निगोद प्राप्त होगा। निगोद तो हम संसारी जीवों की Default setting है। यानी बिना किसी यत्न के अपने-आप मिलता है मगर मोक्ष पाने के लिये "सम्यग्दर्शन की विधि" में बताये गये यत्न अर्थात् आत्मा का पुरूषार्थ करना आवश्यक है; अभी तय हमें करना है कि हमें क्या चाहिये।

There are only two places where the soul resides for infinite time — Mokṣa and Nigoda. In other words, we have only two options. If we do not attain samyagdarśana in order to attain Mokṣa, we shall end up with the second option, Nigoda which is the default setting for all living beings and can be attained without any effort whatsoever. Hence, it is imperative that we make sincere and focused efforts to attain Mokṣa, using the method described in "Samyagdarśana Ki Vidhi". We have to decide now, on what we want.

Download `Samyagdarśan ki Vidhi' or `Samyagdarśan ni Rit' from the Downloads section of the website mentioned below.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इस मनुष्य भव का हर पल बेशक़ीमती है क्यों कि जो समय बीत गया, वह लौट कर नहीं आता है। किसी भी क़ीमत पर नहीं। इस लिये हमें हर पल का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करना है और एक भी क्षण व्यर्थ नहीं गँवाना है।

Each moment of this human life is precious because lost time does not come back. Hence, we must make the best possible use of each moment. Not a moment should be wasted.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मैं देह रूप नहीं मगर देह मन्दिर में विराजमान भगवान आत्मा हूँ। मैं ही पाँचों इन्द्रियों के माध्यम से जानने-देखनेवाला एकमात्र ज्ञायक हूँ। इस लिये जब तक मैं हाज़िर हूँ तभी तक ही ये इन्द्रियाँ जानती-देखती हैं। जैसे ही मैं इस शरीर से निकला (अर्थात् मरण हुआ) तब यही इन्द्रियाँ बेकार हो जायेंगी। वे बिना आत्मा के कुछ भी जान-देख नहीं सकतीं। वस्तुत: आत्मा ही सब कुछ जानती देखती है, न कि इन्द्रियाँ। इसी लिये ही आत्मा को ज्ञायक संज्ञा प्राप्त है।

I am not the body. I am the soul that resides in the body like God in the temple. I am the real knower who know and see with the help of the five senses. As long as I am present, these senses are capable of knowing and seeing. Once I depart from the body (when I die), these very senses will become useless. They cannot know or see in the absence of the soul. In reality, it is the soul that knows and sees, not the senses. This is why, the soul is called 'Jñāyaka' or the knower.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मैं (आत्मा) सत्-चित्-आनन्द स्वरूप हूँ। सत् यानी अस्तित्व, अर्थात् मेरा अस्तित्व त्रिकाल है। चित् यानी जानना देखना, अर्थात् मेरा कार्य त्रिकाल जानने देखने का है। आनन्द यानी अनन्त अव्याबाध अतिन्द्रिय सुख, अर्थात् मेरा स्वभाव त्रिकाल आनन्दमय है। इतने वैभववान होने के बावजूद कई जीव सुखाभास के पीछे पागल दिखते हैं, सुखाभास की भीख माँगते दिखते हैं। यह बड़ी करूणाजनक बात है।

I (the soul) am the embodiment of sat (existence), cit (consciousness) and ānanda (bliss). Sat means existence, meaning my existence is eternal. Cit means knowing and seeing, meaning my work is to know and see all the time. Ananda means unending, uninterrupted supra-sensuous bliss, meaning my true nature is that of eternal bliss. Despite the magnificence of our true nature, some people can be seen going crazy and begging for the illusion of happiness. One feels compassion for such people.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चा सुख उसे कहते हैं जो स्वाधीन हो, शाश्वत हो, कभी भी उस से ऊबना न हो, दु:खमिश्रित न हो, दु:खपूर्वक न हो और दु:खजनक भी न हो। आत्मा ऐसा सुखमय है, अन्य जो भी सुख लगते या दिखते है वें सभी सुखाभास मात्र हैं। क्यों कि वे क्षणिक हैं , पराधीन हैं , दु:खमिश्रित हैं, दु:खपूर्वक हैं और दु:खजनक भी हैं।

True joy is independent, eternal, beyond boredom, unmixed with sorrow, unpreceded by sorrow and does not cause further sorrow. Only the soul has this true joy which is its intrinsic nature. Everything else in the world is but an illusion of joy because it is fleeting, dependent on other factors, sullied by sorrow, preceded by sorrow and causes further sorrow.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धर्म २४x७ का होता है अर्थात् चौबीस घण्टे और हफ़्ते के सातों दिन चले ऐसा होता है। चार भावना, बारह भावना, अन्य योग्यताओं के बोल और "धन्यवाद! सुस्वागतम! (Thank You! Welcome!)" का भाव हमें अपने चित्त में २४x७ सँजोना है। चूँकि हमारा कर्मबन्ध २४x७ चलता रहता है, हमें उस से बचने के लिये धर्म भी २४x७ चले ऐसा चाहिये। यह नहीं कि एक बार प्रक्षाल, पूजा, प्रवचन, सामायिक, क्रम, स्वाध्याय, ध्यान या प्रतिक्रमण इत्यादि कर लेने से हमारा काम पूरा हो गया।

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

Dharma is lived 24x7. It is practised 24 hours a day, on all 7 days a week. Using the Four Bhāvanās, the Twelve Bhāvanās, and other axioms, one must immerse oneself in the disposition of 'Thank You! Welcome!' constantly, 24x7. Since karmic inflow and bondage is constant, 24x7, dharma must also be practised 24x7. Merely Doing prakṣāla and pūjā, listening to pravacana, doing sāmāyika, krama, svādhyāya, dhyāna or pratikramaṇa once a day is not enough.

Bhāvanā - contemplation
Prakṣāla - bathing the image of the divinity
Pūjā - adoration
Pravacana - discourse
Sāmāyika - period of equanimity
Krama - series of rituals
Svādhyāya - self-study
Dhyāna - meditation
Pratikramaṇa - confession

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जागृति के लिये हमें हर घण्टे या दो घण्टे में अपने मन के परिणाम जाँचते रहना है। परिणाम को उन्नत करते रहना है और लगे हुए पापों का प्रायश्चित्त, निन्दा, गर्हा आदि करना है; फिर से ऐसे परिणाम न हों उस का ध्यान रखना है।

For the sake of awareness, we have to keep watching our disposition every hour or every couple of hours. We have to ensure that our disposition remains noble and that we rid ourselves of pāpa karmas through atonement, self-criticism and self-censure, etc. We have to guard against repeating sinful behaviour.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब भी समय मिले णमोकार मन्त्र का स्मरण करते रहना
और हमें भी भगवान बनना है, यह लक्ष्य रखना।

Whenever we get spare time, we should keep reciting the Namokāra Mantra and ensure that our goal also is to become God.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

निरन्तर सत्संग की इच्छा, अन्तर्मुखी रहना और अपने दोष देखते रहना, उन्हें मिटाने (delete करने) का पुरुषार्थ करते रहना, इत्यादि केवल आत्मप्राप्ति के लक्ष्य से करना आवश्यक है। विद्वानों के लिये भी मोह को परास्त करना महादुष्कर कार्य है क्यों कि कोरी विद्वत्ता मोहराक्षस को पराभूत करने के लिये कार्यकारी नहीं है।

Self-realisation should be the only goal. Constant satsaṅga, looking inwards, observing one's own flaws, making sincere and focused efforts to remove one's flaws, etc. are imperative to achieve this. Even scholars struggle to defeat delusion because mere scholarship is insufficient to defeat the demon of delusion.

Satsaṅga - company of the true and pure

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मोह को परास्त करने के लिये जितना वैराग्य और "सम्यग्दर्शन की विधि" में बतायी गई अन्य योग्यताएँ आवश्यक हैं उतनी विद्वत्ता की आवश्यकता नहीं है। बल्कि कभी-कभी तो विद्वत्ता कषाय (क्रोध-मान-माया-लोभ) को जन्म या बढ़ावा देनेवाली बन जाती है। इस लिये सदैव सावधान रहना आवश्यक है।

To defeat delusion, vairāgya and other qualities described in "Samyagdarśana Ki Vidhi" are more important than scholarship. In fact, at times, scholarship leads to the birth of or increase in kaṣāya. Hence, it is imperative to remain alert at all times.

Vairāgya - disinclination toward worldly ties and materialism
Kaṣāya - the 4 passions of anger, arrogance, artifice and avarice

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे आत्मा के बारे में जिज्ञासा होती है वर्तमान काल में
वह भाग्यशाली जीव है।

In today's world, one who is deeply interested in his
soul is truly fortunate.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि आप सुख चाहते हैं तो अपनी शक्ति सुख खोजने में नहीं अपितु स्वात्मानुभूति के लक्ष्य से शुभ भावों में लगायें। इस से सुख अपने आप चलकर आयेगा।

If you want happiness, don't spend your energy looking for happiness. Instead, focus on auspicious emotions with the purpose of attaining self-realisation. Happiness will be yours without much efforts.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम दूसरों के लिये अच्छा सोचते हैं या करते हैं तब
हमारा भला होना अपने आप ही प्रारम्भ हो जाता है।

When we think well of others or try to do good things for others, our own betterment commences spontaneously.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।